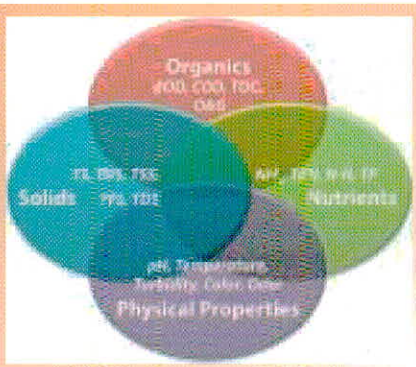

प्रदूषित जल न पीने के योग्य, न कृषि के लिए और न उद्योगों के अनुकूल होता है। सबसे गम्भीर तथ्य है कि प्रदूषित जल, जलीय जीवन को नष्ट कर देता है, उसकी उत्पादन क्षमता को भी कम कर देता है।

मछलियां प्रमुख हैं। लखनऊ की गोमती नदी में कारखानों द्वारा छोड़े गए प्रदूषित जल से नदी का जल इतना विषाक्त हो गया था कि जल के ऊपर मरी हुई मछलियां तैरती दिखाई देती थी। जल प्रदूषण का प्रभाव केवल मनुष्य ही नहीं अपितु पशुओं-मछलियों-चिड़ियों सब पर पड़ता है। प्रदूषित जल न पीने के योग्य, न कृषि के लिए और न उद्योगों के अनुकूल होता है। सबसे गम्भीर तथ्य है कि प्रदूषित जल, जलीय जीवन को नष्ट कर देता है, उसकी उत्पादन क्षमता को भी कम कर देता है। अंततः यह मनुष्य के जीवन के लिए अत्यन्त घातक है।

इस प्रकार उद्योग, जल प्रबन्धन को दोतरफा चुनौती दे रहे हैं। जहां एक ओर जल की बढ़ती मांग परेशान कर रही है वहीं दूसरी ओर फैलते प्रदूषण ने जल प्रबन्धन के लिए नयी-नयी चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। अतः आज सरकारी कठोर कानून एवं कड़े दण्ड की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त जन-जागृति भी एक विकल्प है। जल पुरूष श्री राजेन्द्र सिंह के अनुसार 'जल के प्रबन्धन के लिए आवश्यक है मनुष्य एवं समाज को जल स्रोतों से जोड़ना'।

संपर्क करें :
श्रीमती अंजु चौधरी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान,
रुड़की, उत्तराखंड

जल की महिमा

मानव समझो महिमा जल की,
सुरक्षित रखना सांसें कल की।
बर्बादी इसकी कभी न करना,
वरना पड़ेगा बेवक्त ही मरना।।

वसुंधरा की तुम रखना लाज,
हरियाली बने धरती का ताज।
पल-पल इसकी सेवा करना,
सुख समृद्धि का बहेगा झरना।।

भगीरथ लाए धरती पर गंगा,
दर्शन से होता तन-मन चंगा।
सतत् बहती रहे नदियां शुद्ध,
इनका मार्ग न करो अवरुद्ध।।

शुद्ध हवा और स्वच्छ हो पानी,
लहराए खेत मिले गुड़ धानी।
जल बचाने का रखना ध्यान,
विकसित हो ऐसा ज्ञान-विज्ञान।।

दोस्ती पर्यावरण से

टपटप - टपटप अच्छी लगती,
जल की बूंदों की आवाज।
धरती रानी भी खुश होकर,
ओढ़े सर पर हरियाली का ताज।।

झम-झमा-झम बरसे बादल,
काले मेघा लो कड़के आज।
झूम उठा हरियाला जंगल,
मौसम छेड़ता अपना साज।।

लहराने लगे पेड़ और पौधे,
आसमां में पंछी करते राज।
फूल खिले हैं सुंदर बागों में,
देख कर माली करता नाज।।

अगर हो दोस्ती पर्यावरण से,
वर्षा की नहीं गिरेगी गाज।
नई पीढ़ियां भी सुख भोगेंगी,
मानवता की बचेगी लाज।।

जल ही जीवन

रूठे बादल मान गए जी,
रिमझिम जल बरसाया।
तपती धरती पानी पीकर,
तन-मन उसका है हर्षाया।।

बिन पानी है जीवन सूना,
सूखे होठों ने समझाया।
व्यर्थ करो न इसकी बूंदें,
पानी अमृत है कहलाया।।

महिमा जानें पानी की हम,
कम होती वर्षा ने जतलाया।
हो किफायत रखे सहेज कर,
जल मानव जीवन का साया।।

पानी का हम जब ध्यान रखेंगे,
रहेगी स्वथ्य और निरोगी काया।
अहम प्रश्न है आज प्रदूषण,
जिसने मानव को उलझाया।।

संपर्क करें :
श्री किशोर तारे
ई-4/292, अरेरा कालोनी, पो.ओ. रविशंकर नगर, जिलाःभोपाल-462 016, म.प्र.